अध्याय–5

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान
जोरहाट

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, सोताई, जोरहाट (असम) में स्थित है। यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद्, के अधीन आठ संस्थानों में से एक है। यह संस्थान अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड और त्रिपुरा को मिलाकर पूर्वोत्तर राज्यों में वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार करने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ 1988 में स्थापित किया गया।

वर्ष 2003–2004 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : पौधशाला में मेलाइना आर्बोरीया और डिप्टेरोकार्पस रीटूसस के बीज और मृदा जनित रोगों का प्रबन्ध [आर.एफ.आर.आई./एफ.पी./05/1999–2004]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. ए.एन. सिंह

उपलब्धियां : डी. रीटूसस के पौधशाला रोगों की आवर्तिता के अभिलेख ने दर्शाया कि फोमा यूपीरीना और पी. ट्रोपिका द्वारा उत्पन्न प्ररोह शीर्णता जैसे सबसे सक्षम और विनाशक रोग अप्रैल–मई के दौरान हुए और कालीटोट्राइकम प्रजाति द्वारा उत्पन्न पर्ण शीर्णता जुलाई–अगस्त के दौरान हुई। रोग शुरू होने के 15 दिन पहले रोग निरोधी कवकनाशकीय छिड़काव ने उल्लेखनीय रूप से रोग प्रभाव को कम किया। रोग निरोधी छिड़काव के लिए जांच किए गए कवकनाशियों में से बेविस्टिन सबसे प्रभावी पाया गया।

परियोजना 2 : असम और अरूणाचल प्रदेश की कुछ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वन पादप प्रजातियों के लिए जैव उर्वरक के रूप में वी.ए.एम. का विकास [आर.एफ.आर.आई./एफ.पी./07]

प्रधान अन्वेषक– श्री राजीव कुमार कलिता

उपलब्धियां : मूल परिवेशी मृदा में बीजाणु संख्या और जड़ों में प्रतिशत उपनिवेशन के सन्दर्भ में ए.एम.एफ. की देशज आबादी में मेलाइना आर्बोरीया (रॉक्सब.) के छब्बीस विभिन्न क्लोनों की अनुक्रिया का अध्ययन किया। विभिन्न समय पर मृदा संग्रहण पर विभिन्न क्लोनों के सबंध में बीजाणु संख्याओं में विभिन्नता पाई गई। बीजाणु संख्याओं के औसत मान और विभिन्न क्लोनों की जड़ो में प्रतिशत जड़ उपनिवेशन ने मई और नवम्बर की अपेक्षा अगस्त के महिनें में उच्चतम के साथ मौसमीय पैटर्न अपनाया। मृदा से प्रजाति ग्लोमस फेसिकूलेटम, जी. एग्रीगेटम, जी. मल्टिकूलिस और जाइगेस्पोरा प्रजाति अभिलिखित की गई। चार क्लोनों ने बीजाणु संख्याओं और जड़ो में प्रतिशत उपनिवेशन दोनों के सन्दर्भ में ए.एम.एफ. के प्रति बेहतर अनुक्रिया दिखाई।

परियोजना 3 : असम के तीन जिलों की पौधशालाओं में फलीदार वन वृक्षों से राइजोबियम का पृथक्करण एवं मूल्यांकन [आर.एफ.आर.आई./एफ.पी./08]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. जसबीर सिंह

उपलब्धियां : केवल 17 फलीदार प्रजातियों को स्थानीय पौधशालाओं में रोपण स्टॉक के रूप में प्राथमिकता हासिल होती हैं। कुल 42 राइजोबियम नस्लों को पृथक करके इन प्रजातियों से प्रमाणित किया गया। निर्जर्मित और गैर–निर्जर्मित दोंनो मृदाओं में किए गए अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि पौधों में वृद्धि, जैवमात्रा उत्पादन और नाइट्रोजन मात्रा बढ़ाने के लिए पौधशालाओं में देशज राइजोबियम नस्लों का उपयोग किया जा सकता हैं।

परियोजना 4 : पूर्वोत्तर क्षेत्र की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए पौधशाला में उर्वरक अनुक्रिया अध्ययन [आर.एफ.आर.आई./एस.एम./02/1999–2003]

प्रधान अन्वेषक– श्री बैकुण्ठ गोयला

उपलब्धियां : परिवर्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रयोगों में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, मृदा, रेत और फार्म यार्ड खाद

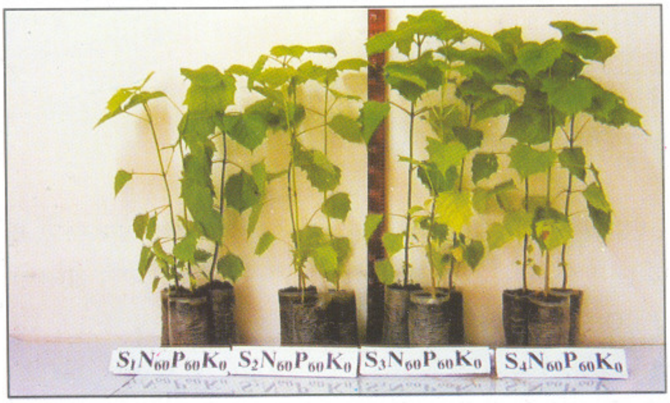

मानकीकृत पात्र मीडिया

है। विभिन्न उपचार संयोजनों का अध्ययन किया। सभी परिवर्तियों पर ऊँचाई और कॉलर व्यास पर आवधिक अभिलिखित वृद्धि आँकडे और विसंगति के परिवर्ती सांख्यिकीय विश्लेषण से निष्कर्ष निकला कि "पॉलीबैग (8"x6") में सर्वोत्तम वृद्धि मीडिया के रूप में मृदा, रेत और फार्म यार्ड खाद (1:1:1 आयतन द्वारा) 60 पी.पी.एम. प्रत्येक संयोंजन में नाइट्रोजन और फॅास्फोरस के साथ परिवर्तियों का संयुक्त प्रभाव हैं"। 60 पी.पी.एम, फॅास्फोरस (90 पी पी एम), मृदा, रेत और फार्म यार्ड खाद (1:1:1 आयतन द्वारा) के साथ संयोजन में प्रत्येक 60 पी पी एम नाइट्रोजन और फास्फोरस के साथ परिवर्तियों के संयुक्त प्रभाव सर्वोत्तम वृद्धि मीडिया और पॉलीट्यूब 8"x3" के रूप में उभरें क्षेत्र में पौध रोपण के लिए आदर्श समय मानसून देखना हैं किन्तु 15 सितम्बर बाद नहीं।

किए गए प्रयोग से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बीज के अंकुरण से वन स्थलों में सफल रोपण तक मेलाइना आर्बोरीया के मजबूत रोपणीय पौधों के लिए पौधशाला तैयार करना ठीक 45 दिन के भीतर सम्भव हैं। युवा आयु के रोपित पौधें 84 प्रतिशत से अधिक लट्ठे उत्पादित करते हैं जो रोपित स्टॅाक में परिवर्तनीय सीधे तने होते हैं जबकि ठूंठ रोपण के मामले में यह टेढ़े तने उत्पादित करते हैं।

परियोजना 5 : पूर्वोत्तर भारत की चयनित बांस प्रजातियों के लिए पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण [आर.एफ.आर.आई./ एस.एम./07/1999–2003]

प्रधान अन्वेषक– श्री एस. पटनायक

उपलब्धियां : चार बांस प्रजातियों यथा–बम्बूसा टूल्डा, बम्बूसा न्यूटन्स, बम्बूसा हेमिल्टोनाई, बम्बूसा बाल्कुआ और डैन्ड्रोकैलामस के लिए पौधशाला तकनीक को मानकीकृत किया और इसके लिए पद्धतियों का पैकेज विकसित किया गया।

वर्ष 2003–2004 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : बांसों और बेतों की वितरण गतिकी पर अध्ययन और इनका पर–स्थाने संरक्षण [आर.एफ.आर.आई./ई.ई/03/2003–2005]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. के.सी. पाठक

स्थिति : बांसो की विभिन्न प्रजातियों के स्थानीयकरण के लिए असम के भागों में सर्वेक्षण किए गए। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न भागों में बांसों की विभिन्न प्रजातियों के प्राप्ति स्थान के मानचित्र तैयार किए गए। बांसों की 4 प्रजातियों का संग्रहण और पर–स्थाने संरक्षण किया गया।

परियोजना 2 : हरी खाद अकार्बनिक उर्वरकों द्वारा झूम खेती मृदा में एकीकृत पोषक प्रबंध [आर.एफ.आर.आई./ एस.सी./04/2000–2003]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. जसंबीर सिंह

स्थिति : हरी खाद पर समाविष्ट सेसबेनिया बाइस्पिनोसा, डैल्बर्जिया सिस्सू, लैण्टाना कमारा, ऐल्बिजिया प्रोसेरा और क्रोमोलेइना ओडोराटा ने क्रमशः 55.2 प्रतिशत, 20.12 प्रतिशत, 19.80 प्रतिशत और 8.30 प्रतिशत अनाज उत्पादन किया।

परियोजना 3 : पूर्वोत्तर भारत में व्यवहार्य आर्थिक मॉडलों के विकास के लिए विभिन्न विद्यमान भूमि उपयोग प्रणालियों का मूल्यांकन [आर.एफ.आर.आई./ एस.सी./06/2003–2008]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. जसबीर सिंह

स्थिति : प्वाइन्टेड गार्ड, चाय और झूम खेती की फसल उत्पादकता का लागत लाभ अनुपात निकाला गया। असम के कार्बि एंगलांग

जिले के सागौन, चाय, अनानास और झूम खेती क्षेत्रों से मृदा नमूने एकत्र किए गए। मृदा के भौतिक–रासायनिक गुणों का विश्लेषण प्रगति पर है।

परियोजना 4: चयनित ऊर्जा रोपण प्रजातियों की वृद्धि, जैवमात्रा और ऊर्जा उत्पादन क्षमता [आर.एफ.आर.आई./एस.सी./07/2003–2005]

प्रधान अन्वेषक– श्री अनूप चन्द्रा

स्थिति : संस्थान के नाहारोनी अनुसंधान केन्द्र में रोपण पहले से स्थापित है। अध्ययन के लिए कुल दस प्रजातियों का चयन किया गया। छमाही अन्तराल पर वृद्धि आँकड़े अभिलिखित किए और घटकवार जैवमात्रा सालाना रूप से परिकलित की गई। वृद्धि, जैवमात्रा, नमी मात्रा और ऊर्जा मान जैसे पैरामीटरों का विश्लेषण किया जा रहा है।

ऊर्जा रोपण के तहत उगे तीन साल के मैलोटस एल्बस का दृश्य

ऊर्जा रोपण के तहत उगे तीन साल के एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस का दृश्य

परियोजना 5: चेरापूंजी, मेघालय के अत्यधिक अपरदित स्थल का सुधार [आर.एफ.आर.आई./ एस.एम./ 04/2003–2006]

प्रधान अन्वेषक– श्री बी. गोयला

स्थिति : मेघालय वन विभाग से 22.52 हैक्टेयर भूमि प्राप्त की गई, 1.5 हैक्टेयर में तारबाड़ लगाई, भू–आकृतिक आँकड़े एकत्र किए, विभागो, गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग के लिए सम्भावनाओं का पता लगाया।

पौधों का रोपण

दो अलग–अलग गड्ढे आकारों में एक्स–बकलेन्डिया पॉपूलेनिया और एलनस नीपेलेन्सिस के पौधे रोपित किए। जल संचयन संरचना, मल्चिंग और परिवर्ती उर्वरक मात्राओं जैसे विभिन्न उपचार संयोजनों को रखकर प्रत्येक ब्लॉक में 9 पौधे थे।

इस तरह के नमूनों के लिए भौतिक रासायनिक और पोषणिक गुणों का विश्लेषण किया गया।

परियोजना 6: विभिन्न अन्तिम उपयोगों के लिए चयनित बांस प्रजातियों के जननद्रव्य मूल्यांकन [आर.एफ.आर.आई./ एस.एम./03/2001–2004]

प्रधान अन्वेषक–श्री वी.के.डब्ल्यू. बाजपेयी

स्थिति : वर्ष 2003 के दौरान 1.0 हैक्टेयर बढाए गए क्षेत्र में तेलियामूरा, त्रिपुरा और नाहारोनी अनुसंधान केन्द्र में सांख्यिकीय अभिकल्प के साथ मूल्यांकन परीक्षण स्थापित किए।

परीक्षण में शामिल प्रजातियां बम्बूसा बाल्कुआ, बम्बूसा न्यूटन्स, बम्बूसा टूल्डा और डेन्ड्रोकैलामस हेमिल्टोनाई थी, प्रति

प्रजाति जीन प्ररूपों की संख्या 5 प्रतिकृतियों में 10 थी, इसे 0.65 हैक्टेयर तक बढ़ाया गया।

बम्बूसा बाल्कुआ, बम्बूसा टूल्डा, बम्बूसा न्यूटन्स और डेन्ड्रोकैलामस हेमिल्टोनाई की विभिन्न प्रजातियों की धन गुल्मों की एक आधार आबादी उत्पादित की गई और इसे पौधशाला में पोषित किया जा रहा है। बम्बूसा बाल्कुआ की 33 धन गुल्मों के करीब 1727 शाखाओं, बम्बूसा टूल्डा की 36 धन गुल्मों की 802 शाखाओं, बम्बूसा न्यूटन्स की 13 धन गुल्मों की 1038 शाखाओं और डेन्ड्रोकैलामस हेमिल्टोनाई की 9 धन गुल्मों की 166 शाखाओं को पौधशालाओं में पोषित किया जा रहा है।

बम्बूसा बाल्कुआ की कलमें (3 माह)

बम्बूसा टूल्डा की कलमें (6 माह)

परियोजना 7: खासी चीड़ (पाइनस केसिया) का आनुवंशिक सुधार [आर.एफ.आर.आई./ टी.आई./ 08/2001–2004]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. ओमवीर सिंह

स्थिति : शिलांग, मेघालय के पास रीट ख्वान में 10 हैक्टेयर बीज उत्पादन क्षेत्र स्थापित किया। छंटाई संक्रिया के लिए राज्य वन विभाग को वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी दी गई। मेघालय में खासी चीड़ के कुल 29 धन वृक्षों का चयन किया गया। सन्ततियां लगाने के लिए धन वृक्षों से बीज एकत्र किए। विभिन्न धन वृक्षों के शंकु और बीज पैरामीटरों की माप ली गई और प्रयोगशाला में अंकुरण परीक्षण तैयार किए।

परियोजना 8: आनुवंशिक सुधार द्वारा सागौन का उच्च मान विक्रेय जैवमात्रा उत्पादन [आर.एफ.आर.आई./ टी.आई./05/1999–2002]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. ए.के.सरकार

स्थिति : 6 X 6 मी. के अन्तराल पर अभिकल्प को दुगना करके 10 प्रतिकृति में 50 क्लोनों को लेकर तेलियामूरा, खासिया मंगल बीट, तेलियामूरा वन रेंज, तेलियामूरा वन प्रभाग और त्रिपुरा में सागौन के क्लोनीय बीज उद्यान स्थापित किए। कुल 2 हैक्टेयर क्षेत्र कवर किया गया।

परियोजना 9: मेलाइना आर्बोरीया में विभिन्न लक्षणों के लिए विभिन्न क्लोनों एवं सन्ततियों का स्थायीत्व परीक्षण [आर.एफ.आर.आई./टी.आई./ 10/2003–2005]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. अशोक कुमार

स्थिति : राष्ट्रीय आधार पर क्लोनीय बीज उद्यानों के 49 चयनित क्लोनों से एकत्रित बीजों के बहुस्थानिक सन्तति परीक्षण स्थापित किए ताकि बड़े पैमाने पर संवर्धन के लिए उच्च उत्पादन सन्ततियों का चयन किया जा सके। सफल कार्यान्वयन और परीक्षण से आनुवंशिक रूप से उत्कृष्ट मेलाइना आर्बोरीया सुनिश्चित करेंगें।

परियोजना 10: डिप्टेरोकार्पस रीटूसस का आनुवंशिक सुधार और क्लोनीय प्रवर्धन [आर.एफ.आर.आई./टी.आई./11/2003–2004]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. सी.आर. मीणा

स्थिति : विभिन्न वृद्धि पैरामीटरों के लिए देववन और नाहारोनी में पौध बीज उद्यानों का अध्ययन किया गया। देववन परिसर में रोपित कुछ सन्ततियों की किशोर अवस्था में प्रचुर पुष्पण देखा गया।

डिप्टेरोकार्पस रीटूसस के युवा पादप में प्रचुर पुष्पण

परियोजना 11: संयुक्त वन प्रबन्ध द्वारा सक्षम वन संसाधन प्रबन्ध के लिए गांव स्तर समिति का क्षमता निर्माण [आर.एफ.आर.आई./सी.एफ.ई./ 01/2002–2006]

प्रधान अन्वेषक– श्री बी. के. पाण्डे

स्थिति : साहित्य सर्वेक्षण किया। माजूली (असम) में स्थल पहचान की। किसानों, समुदायों और गैर सरकारी संगठनों के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श और सम्पर्क स्थापित किया।

बांस की पहचान

किसान पौधशाला में महिलाओं की भागीदारी

परियोजना 12: चयनित आर्द्र–उष्णकटिबंधीय सुरभित पादपों से सुगन्धित उत्पादन एवं गुणवत्ता विशेषकों पर अध्ययन [आर.एफ.आर.आई./सी.एफ.ई./02]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. वाई.सी. त्रिपाठी

स्थिति : पटचौली–कृष्ट क्षेत्रों में भूखण्डों का अनियमित चयन किया गया और पत्ती उत्पादन के परिकलन हेतु विभिन्न पैरामीटरों के लिए प्रत्येक भूखण्ड में प्रेक्षण लिए गए। नमी मात्रा का निर्धारण किया और ताजे और शुष्क पत्ती अनुपात परिकलित किया। फसल के लिए अनुकूलतम अवस्था के मानकीकरण के लिए विभिन्न परिपक्वता अवस्थाओं के पत्ती नमूनों की उनकी तेल मात्रा के लिए जांच की गई। विभिन्न प्रायोगिक स्थलों से एकत्रित पत्ती नमूनों का, उनके सगंध तेल मात्रा के लिए मूल्यांकन किया गया।

पटचौली पत्तियों के सगंध तेल (सुगन्धित घटक) मात्रा पर शुष्कं मोड़ के प्रभाव पर प्रयोग तैयार किए गए। कृष्ट क्षेत्र से काटी गई पटचौली के पत्ती नमूनों को छाया एवं अंधेरी अवस्थाओं के साथ ही ढेर और फैलाव शुष्कन मोड़ के तहत रखा गया। विभिन्न अवस्थाओं के तहत शुष्कित पत्ती नमूनों का रासायनिक मूल्यांकन किया जा रहा है।

काटी गई पत्तियों के रंग, गंध और स्वाद आदि जैसे इन्द्रियग्राही अभिलक्षणों का अध्ययन किया गया और पत्ती नमूनों को इनके रूप–रंग के आधार पर पृथक किया गया। प्रति पादप पूरी तरह परिपक्व (भूरा रंग), परिपक्व (भूरा सा हरा) और अपरिपक्व (हरी) पत्तियों की संख्या और प्रति भूखण्ड पत्ती उत्पादन का परिकलन किया गया। पत्तियों की तीन श्रेणियों की मोटाई और पत्ती क्षेत्र की माप ली गई। नमी मात्रा का निर्धारण किया और ताजे से शुष्क भार अनुपात परिकलित किया। रोपण क्षेत्र में पत्तियों पर कवकी उत्पीड़न साथ ही साथ भण्डारण के दौरान देखा गया। ग्रसित पत्ती नमूने एकत्रित किए और आगे विश्लेषण के लिए दृश्य प्रेक्षण के आधार पर अत्यधिक और हल्के के रूप में श्रेणीकृत किया। सगंध तेल के उत्पादन पर जैव अवनति प्रभावों को मूल्यांकित किया जा रहा है।

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : असम के गिबॉन वन्य प्राणि अभ्यारण्य के डिप्टेरोकार्प वन पर पारिस्थितिकी अध्ययन [आर.एफ.आर.आई./ई.ई./04/2003–2006]
प्रधान अन्वेषक– डॉ. एस. त्रिवेदी

स्थिति : वनस्पति के स्थल सूचीकरण का कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 2 : पूर्वोत्तर भारत की चयनित औषधीय पादपों के जननद्रव्य संग्रहण, संरक्षण और बहुमात्र गुणन [आर.एफ.आर.आई./ई.ई./05/2003–2006]
प्रधान अन्वेषक– डॉ. के.सी. पाठक

स्थिति : चयनित औषधीय पादपों के स्थानीयकरण, संग्रहण और संरक्षण के लिए असम के भागों में सर्वेक्षण किए गए और कुल 30 औषधीय पादप एकत्र करके वर्षा वन अनुसंधान संस्थान परिसर में संरक्षित किए।

वर्ष 2003–2004 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

कोई नहीं

वर्ष 2003–2004 के दौरान जारी परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : नागालैण्ड, भारत में जैवविविधता के सतत् प्रबंध में अंगामी जनजाति की देशज जानकारी [आर.एफ.आर.आई./ई.पी./03/2003–2006]
प्रधान अन्वेषक–डॉ. जसबीर सिंह

स्थिति : परियोजना स्थल का सर्वेक्षण किया। अंगामी नागाओं पर विस्तृत सम्बन्धित सूचना एकत्र की जा रही है। संसाधन प्रबंध आंकड़ों के संग्रहण के लिए प्रश्नावली तैयार की गई।

परियोजना 2 : झूम खेती में परित्यक्त परती के सुधार पर N_2 निर्धारक पादपों का सहयोग [आर.एफ.आर.आई./ई.पी./04/2003–2006]
प्रधान अन्वेषक–डॉ. जसबीर सिंह

स्थिति : भूखण्ड तैयारी और नाइट्रोजन स्थायीकर प्रजातियों के लिए बीज बुआई की गई। संबंधित भूखण्ड में हरी खाद प्रजाति समाविष्ट की गई।

परियोजना 3 : ब्रहमपुत्र नदी में माजूली द्वीप की उत्पादक भूमि और आशाजनक वनस्पति का संरक्षण [आर.एफ.आर.आई./ई.पी./05]
प्रधान अन्वेषक–श्री बी.के. पाण्डे

स्थिति : साहित्य और क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया तथा माजूली (असम) में अध्ययन स्थल का चयन किया। निवासी किसानों, समुदायों और गैर–सरकारी संगठनों के साथ पारस्परिक क्रिया

और सम्पर्क किया गया। प्रस्तावित कार्य योजना के कार्यान्वयन के लिए कार्यवाही शुरू की गई, परियोजना में एक जूनियर प्रोजेक्ट फैलो की नियुक्ति की गई, चयनित स्थल में वनस्पति की गणना के लिए सर्वेक्षण भी शुरू किया गया, दो किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम किए गए।

परियोजना 4 : असम के काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में संरक्षण के लिए विभिन्न पारितंत्रों की जैविकीय विविधता का मूल्यांकन और विधियां स्थापित करना [आर.एफ.आर.आई./ई.पी./ 06/2003–2006]
प्रधान अन्वेषक–डॉ. पी.के. खत्री

स्थिति : काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क में अनुसंधान करने के लिए असम सरकार से अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में अनुमति प्राप्त हुई। क्षेत्र की टोपो–शीटें (1:50,000) और मानचित्र एकत्र किए गए। पार्क में अध्ययन स्थल का चयन किया। वनस्पति और घास भूमि की गणना का काम प्रगति पर है। वनस्पति सर्वेक्षण, वन भूमि में 100 मी. X 100 मी. के स्थायी भूखण्ड, घास भूमि में 50 मी. X 20 मी. के भूखण्ड तैयार करने का कार्य शुरू किया गया। पादप नमूने एकत्र किए जा रहे हैं और प्रजातियों की गणना प्रगति पर है। संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण आर्किडों की करीब 10 प्रजातियां एकत्र की गई।

फ्रेगमाइटीस कार्का के साथ प्रभावी घास भूमि, काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क

काजिरंगा राष्ट्रीय पार्क के भूमि आर्किड (कैलेन्थी मासूएका)

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

कोई नहीं

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2003–04 के दौरान पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2003–04 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2003–04 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
अरूणाचल प्रदेश	2	2	कोई नहीं
असम	5	4	5
त्रिपुरा	–	1	–

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित और हस्तान्तरित

वर्ष 2003–2004 के दौरान भारत के पूर्वोत्तर के किसान, गैर सरकारी संगठनों और वन कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण का

आयोजन किया गया और बांस के वृहद् प्रचुरोद्भवन और परिरक्षण से संबधित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया।

ग्रामीण लोगों, वानिकी विद्यार्थियों साथ ही साथ वन विभागों, वन निगमों और कम्पनियों आदि जैसी प्रमुख रोपण एजेन्सियों के लिए निम्न लागत, अल्प अवधि पौधशाला प्रौद्योगिकी।

शिक्षा और प्रशिक्षण

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट के श्री स्वेपेन्दु पटनायक, वैज्ञानिक 'सी' ने चाइना नेशनल बैम्बू रीसर्च सेन्टर, हंगाऊ, पी.आर. चीन में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय "बांस खेती, प्रक्रमण और उत्पादन प्रौद्योगिकियां, इसका संचालन, औजार और छोटी मशीनों" में भाग लिया। अवधि 11 से 24 अगस्त, 2003।

सहानुबंध और सहयोग

राष्ट्रीय

असम, मेघालय, मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल के विभिन्न वन विभागों और असम कृषि विश्वविद्यालय जोरहाट; क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जोरहाट; टॉकलाईं प्रायोगिक स्टेशन, जोरहाट; पूर्वोत्तर हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग; केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तेजपुर; गुवाहटी विश्वविद्यालय, गुवाहटी; असम विश्वविद्यालय, सिलचर; पूर्वोत्तर क्षेत्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, नाहरलेगून; राज्य वन अनुसंधान संस्थान, ईटानगर; राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरों, नई दिल्ली; केरल वन अनुसंधान संस्थान, पीची; गोविन्द बल्लभ पंत हिमालयन पर्यावरण एवं विकास संस्थान, कोसी कटारमल, अल्मोड़ा जैसे संगठनों के साथ पहले ही सहानुबंध एवं सहयोग विकसित किया गया है।

प्रकाशन

जॉरनल

1. बरूवा, के.एन. और सिंह, जे. (2003): फॉलिएर ट्राइकोमीस ऐज ऐड इन क्लोनल वैरिएबिलिटी ऑफ मेलाइना आर्बोरीया। जॉरनल ऑफ ट्रापिकल फॉरेस्ट साइंस में सूचित।
2. बरूआ, के. एन. और सिंह, जे. (2003): इन्वेसिंग एक्जोटिक वीड्स इन झूम फैलो वेजीटेशन ऑफ कार्बि एंगलांग डिस्ट्रिक्ट, असम। असम कृषि विश्वविद्यालय में 27 से 29 अप्रैल, 2003 तक सम्पन्न "भारत में अन्यदेशीय हमलावर खरपतवारों" पर राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत शोधपत्र।
3. बोरा, आई.पी.; बरूवा, ए. और सिंह, जे. (2003) : आइसोलेशन एंड सलेक्शन ऑफ इफिसिएन्ट राइजोबियम स्ट्रेन्स फ्राम डैल्बर्जिया सिस्सू। इंडियन जॉरनल ऑफ एग्रिकल्चर रीसर्च में सूचित।
4. दत्ता, डी.; बोरा, डी.पी. और कलिता, आर.के. (2003): आर्बूस्कूलर माइकोराइजल एसोसिएशन इन फॉरेस्ट ट्रीज ऑफ नार्थ-इस्टर्न रीजन ऑफ इंडिया; माई फॉरेस्ट, 39(2): 171-177।
5. हजारिका, पी.; त्रिपाठी, वाई.सी. और झासा, एन.एन. (2003): इन्डिजीनस एण्ड ट्रेडिशनल एग्रोफॉरेस्ट्री इन असम। एप्रोचेज फ्रार इन्क्रीजिंग एग्रिकल्चरल प्रोडक्टिविटी इन हिल एण्ड माउन्टेन इकोसीस्टम पर राष्ट्रीय सेमिनार की कार्यवाही (सम्पा. भट्ट, बी.पी.; बुजारबरूवा, के.एम.; शर्मा, वाई.पी. और पातीराम) पी.पी. 149-152, पूर्वोत्तर हिल क्षेत्र के लिए आई.सी.ए.आर. अनुसंधान काम्प्लेक्स, उमिआम, मेघालय।
6. फलिता, आर.के.; बोरा, डी.पी. और दत्ता,डी. (2002): एसोसिएशन ऑफ वेसिकूलर आर्बूस्कूलर माइकोराइजा वीद 20 बायोमास स्पीसिज़ इन असम। इंडियन फॉरेस्टर, (प्रेस में)।
7. कौशिक, पी; त्रिपाठी, वाई.सी. और पाण्डे, बी.के. (2003): इन्डस्ट्रियल प्रोस्पेक्ट्स ऑफ पोस्ट फ्लावरिंग यूटिलाइजेशन ऑफ बैम्बू रीसोर्सेज। कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़, सिरसी (कर्नाटक) में 25 से 27 फरवरी, 2003 तक बांस और बेंत संसाधन का संरक्षण, प्रबंध और उपयोग-2003 पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की कार्यवाही में।

8. पाण्डे, बी.के.; कौशिक, पी.; त्रिपाठी, वाई.सी. और हजारिका, पी. (2003): एक्सटेन्शन ऑफ टैक्नोलॉजी फॉर इन्हैन्समेंट ऑफ प्रोडक्टिविटी अंडर कम्यूनिटी फॉरेस्ट्री एंड एक्सटेन्शन प्रोग्राम। 23 से 25 सितम्बर,2003 तक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में सम्पन्न" पूर्वोत्तर भारत के लिए उन्नत वनीकरण प्रौद्योगिकियों का उपयोग" पर प्रशिक्षण में प्रस्तुत।

9. पटनायक, एस.; बोराह, ई.डी.; कौर एच. और बोराह, के. (2003): "कल्टिवेशन ऑफ सीम्पोडियल बैम्बूस– साइंटिफिक टेक्निक्स एण्ड प्रैक्टिसेज" 23 से 25 सितम्बर, 2003 तक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में सम्पन्न। राष्ट्रीय वनीकरण और पारि विकास बोर्ड, एन.ई.एच.यू., शिलांग के सहयोग से वर्षा एवं नम पर्णपाती वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित "पूर्वोत्तर भारत में वनीकरण के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग" पर कार्यशाला में प्रस्तुत शोधपत्र।

10. प्रसाद, के.जी.; गोगाई, एस. और सिंह, जे. (2003): बायोलॉजिकल रीजूवीनेशन ऑफ सिक टी स्वॉयल ऐट नाहारोनी, गोलाघाट डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम। 20 जनवरी, 2004 को वन उत्पादकता संस्थान, राँची में सम्पन्न "निम्नीकरण के मानवोद्भवी दबाव के तहत भूमियों का सुधार" पर राष्ट्रीय सेमिनार की कार्यवाहियों में प्रकाशित किया जाएगा।

11. सिंह, जे. और बरूवा, के.एन. (2003): "स्टैट्स ऑफ बैम्बू रीसोर्स इन नार्थ–इस्ट इंडिया"। कृषि विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय निधि, हैफलांग और गुवाहटी में स्थित प्रमुख गैर सरकारी संगठन, एकीकृत ग्रामीण विकास ब्यूरों, गुवाहटी, असम के तत्वावधान में 21 अक्टूबर को हैफलांग कल्चरल हाल में आयोजित "बांस पुष्पण का जागरूकता अभियान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्भावित प्रभाव और इसका प्रबंध" की कार्यशाला में प्रस्तुत शोधपत्र।

12. सिंह. जे.; बरूवा, के.एन. और दास, एन. (2003): दी रोल ऑफ क्रोमोलेइना ओडोराय और लैण्टाना कैमेरिन स्लैश और बर्न फैलो सिस्टम ऑफ नार्थ–ईस्ट इंडिया। इंडियन जॉर. ऑफ वीड साइंस में सूचित।

13. सिंह, जे. और बरूवा, के.एन. (2003): लीफ मैक्रोमॉर्फोलॉजिकल वैरिएसन्स इन मेलाइना आर्बोरीया रॉक्सब क्लोन्स। इंडियन फॉरेस्टर में सूचित।

14. सिंह, जे.; बोरा, आई.पी.; बरूवा,ए. और बरूवा, के.एन. (2003): एलीलोपैथिक इफैक्ट ऑफ सक्सनल वीड स्पीसिज़ ऑन जर्मिनेशन एंड सीडलिंग वाइगर ऑफ ट्रेडिशनल पैड़ी वैराइटी ऑफ झूम। दी वर्ड वीड में सूचित।

15. सिंह, जे.; बोरा, आई.पी. और बरूवा, ए. (2003): इफैक्ट ऑफ शिफ्टिंग कल्टिवेशन ऑन न्यूट्रिएन्ट स्टेट्स ऑफ स्वॉयल इन सिलोनिजान (कार्बि एंगलांग) असम (इंडियन फॉरेस्टर में प्रकाशन के लिए स्वीकार)।

16. सिंह, जे.; बोरा, आई.पी. और बरूवा, ए. (2003): चेन्जेज ऑफ दी फीजिको– कैमिकल प्रोपर्टीज ऑफ स्वॉयल अंडर शिफ्टिंग कल्टिवेशन वीद स्पेशल रीफरेन्स टू कार्बि एंगलांग डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम। जे. फॉरेस्ट्री, 26(2): 116–122।

कार्यवाहियां

- कलिता, आर.के.; बोरा, डी.पी. और दत्ता, डी. (2003): रीस्पॉन्स ऑफ डिफरेन्ट क्लोन्स ऑफ मेलाइना आर्बोरीया टू नेटिव पॉप्यूलेशन ऑफ आर्बूस्कूलर माइकोराइजल फंगी। जनवरी, 2004 को सम्पन्न असम विज्ञान सोसाइटी के तकनीकी सत्र के लिए भेजा।

पुस्तकों में अध्याय

1. कलिता, आर.के.; दत्ता, डी. और बोरा, डी.पी. (2003): आर्बूस्कूलर माइकोराइजल एसोसिएशन। मेलाइना आर्बोरीया ए टैक्नोलॉजी मिशन : में (सम्पा.– अशोक कुमार, ए.एन. सिंह, आर.के. कलिता और के.जी. प्रसाद) वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट द्वारा प्रकाशित, पी.पी. 98–106।

2. कलिता, आर.के. (2003): स्वॉयल सोलेराइजेशन फॉर मैनेजमेन्ट ऑफ स्वॉयल वार्न पैथोजन्स इन फॉरेस्ट नर्सरी। "प्लास्टिकल्चर इन्टरवेन्शन फॉर एग्रिकल्चर डवलपमेन्ट इन नार्थ–ईस्टर्न रीजन" में। (सम्पा.– के.के. सत्पथी और अश्वनी कुमार)। पूर्वोत्तर हिल क्षेत्र के लिए आई.सी.ए.आर. अनुसंधान काम्प्लेक्स, उमिआम, मेघालय द्वारा प्रकाशित, पी. 112–119।

3. गोयला, बी.; प्रसाद, के.जी.; बोर्थाकुर, जे.बी. और गोगाई, बी. (2003): "एफोरस्टेशन ट्रेन्ड एंड इम्प्रूव्ड नर्सरी प्रैक्टिसेज" पर शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसे 23–25 सितम्बर, 2003 तक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में सम्पन्न राष्ट्रीय वनीकरण एवं पारि विकास बोर्ड, एन.ई.एच.यू., शिलांग के सहयोग से वर्षा एवं नम पर्णपाती वन अनुसंधान द्वारा आयोजित "पूर्वोत्तर भारत के लिए उन्नत वनीकरण प्रौद्योगिकियों का उपयोग" पर कार्यशाला में बी. गोयला, उप वन संरक्षक द्वारा प्रस्तुत किया गया।

4. "दस्तकारी के लिए उपयुक्त बेंत और बांस प्रजातियों की संसाधन वृद्धि और प्रक्रमण" नामक बाहर से सहायता प्राप्त परियोजना की अन्तिम रिपोर्ट "प्रोजेक्ट कम्पलीशन रिपोर्ट 2000–2002" तैयार करके प्रस्तुत की गई।

5. त्रिपाठी, वाई.सी. और सिंह, एस. (2003): प्रौस्पेक्टिंग फाइटो–मैडिसिनल डाइवर्सिटी : थ्रेट्स एंड चैलेन्जेज। रीसेन्ट प्रोग्रेस इन मैडिसिनल प्लान्ट्स में (सम्पा.– गोविल, जे.एन. और सिंह, वी.के.) साइंस टैक पब्लिशिंग एल.एल.सी., होस्टन, टेक्सास, यू.एस.ए.।

6. सिंह, एस. और त्रिपाठी, वाई.सी. (2003): फाइटोकैमिकल स्टैण्डर्डाइजेशन टूवार्ड क्वालिटी ऐस्योरेन्स ऑफ फाइटोमैडिसिन्स। रीसेन्ट प्रोग्रेस इन मैडिसिनल प्लान्ट्स में (सम्पा.– गोविल, जे.एन. और सिंह, वी.के.) साइंस टैक पब्लिशिंग एल.एल.सी., होस्टन, टेक्सास, यू.एस.ए.।

7. त्रिपाठी, वाई,सी.; कौशिक, पी. और पाण्डे, बी.के. (2003): पटचौली (पोगोस्टीमॉन केबलिन) : ए प्रॉमिशिंग मैडिसिनल एंड ऐरोमेटिक क्रॉप फॉर नार्थ–ईस्टर्न इंडिया। रीसेन्ट प्रोग्रेस इन मैडिसिनल प्लान्ट्स (सम्पा.– गोविल, जे.एन. और सिंह, वी.के.) साइंस टैक पब्लिशिंग एल.एल.सी., होस्टन, टेक्सास, यू.एस.ए.।

8. हजारिका, पी.; त्रिपाठी, वाई.सी.; पाण्डे, बी.के. और कौशिक, पी. (2003): यूज़ ऑफ बायोफर्टिलाइजर इन बैम्बू बेस्ड एग्रोफॉरेस्ट्री सीस्टम इन नार्थ–ईस्ट इंडिया : प्रौस्पेक्ट्स एण्ड लिमिटेशन्स। एग्रोफॉरेस्ट्री इन एन.ई.एच. रीजन में (सम्पा. बुजार बरूवा, के.एम) पूर्वोत्तर हिल क्षेत्र के लिए आई.सी.ए.आर. अनुसंधान काम्पलेक्स, उमिआम, मेघालय।

9. त्रिपाठी, वाई.सी.; पाण्डे, बी.के.; कौशिक, पी.के. और हजारिका, पी. (2003): एन.टी.एफ. पीज़ ऑफ इंडियन नार्थ–ईस्ट रीजनः नीड फॉर संसटेनेबल मैनेजमेन्ट एंड प्रोस्पेक्ट्स ऑफ प्रोडक्टिविटी इन्हैन्समैंट थ्रो एग्रो फॉरेस्ट्री। एग्रो फॉरेस्ट्री इन एन.ई.एच. रीजन में (सम्पा. बुजारबरूवा, के.एम.) पूर्वोत्तर हिल क्षेत्र के लिए आई.सी.ए.आर. अनुसंधान काम्पलेक्स, उमिआम, मेघालय।

10. प्रसाद, के.जी. और पटनायक, एस. (2003): रीसोर्स इन्हैन्समैन्ट एंड प्रोसेसिंग ऑफ केन एंड बैम्बूज सूटेबल फॉर हैन्डिक्राफ्ट– ए कम्पैन्डियम ऑफ बैम्बू रीसर्च, आर.एफ.आर.आई., जोरहाट, असम। संकलित।

11. पटनायक, एस.; पाठक, के.सी.; भुयान, टी.सी.; खोबरागढ़े एन.डी.; दास. पी. और प्रसाद, के.जी. (2004): मैन्शुरेशनल स्टडीज़ इन मीलोकेना बेसिफेरा। जॉरनल ऑफ ट्रापिकल फॉरेस्ट साइंस, 16(1): 62–70।

प्रस्तुत शोधपत्र

1. पटनायक, एस.; त्रिवेदी, एस.; पाठक, के.सी.; बोराह, के. और खार्शि-इंग, ए. (2004): साइंटिफिक क्लम्प मैनेजमेन्ट

फॉर सस्टेनेबल शूट प्रोडक्शन इन डेन्ड्रोकैलामस हेमिल्टोनाई नीज़ एंड एरन। यह शोधपत्र 27 फरवरी से 4 मार्च 2004 तक नई दिल्ली में सम्पन्न विश्व बांस कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया।

2. पटनायक, एस.; बोराह, ई.डी.; कौर, एच. और बोराह, के. (2003): "कल्टिवेशन ऑफ सीम्पोडियल बैम्बूज़– साइंटिफिक टेक्नीक्स एण्ड प्रैक्टिसेज"। जोरहाट में एन.ए.ई.वी. (एन.ई.एच.यू.) और आर.एफ.आर.आई. द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यशाला में प्रस्तुत शोधपत्र।

3. खार्शि-इंगू, ए. और पटनायक, एस. (2003): बैम्बू रीसोर्स इन नार्थ-इस्टर्न इंडिया–स्टेटस, रीसर्च एण्ड मैनेजमेन्ट इशूज नागालैण्ड वन विभाग द्वारा आयोजित कोहिमा, नागालैण्ड में सम्पन्न "बांस और इसका उपयोग" पर सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र।

4. पटनायक, एस.;पाठक, के.सी., त्रिवेदी; एस.; खत्री, पी.के. और प्रसाद, के.जी. (2003): कोहोर्ट मैपिंग इन बैम्बू रीसोर्स मैनेजमेंन्ट। सितम्बर, 2003 के दौरान वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में सम्पन्न "पुनरूत्पादन टास्क फोर्स बैठक" में प्रस्तुत शोधपत्र।

5. सिंह, जे. (2003): स्टेट्स ऑफ बैम्बू रीसोर्स इन नार्थ–ईस्ट इंडिया। 21 अक्टूबर, 2003 को आई एफ ए डी और बर्ड द्वारा हैफलांग में सेमिनार में प्रस्तुत शोधपत्र।,

लोकप्रिय विज्ञान शोध लेख

- कलिता, आर.के.* (2003): ज्वाइंट फॉरेस्ट मैनेजमेन्ट–ऐन इन्नोवेटिव एप्रोच फॉर रीक्लेमेशन ऑफ डीग्रेडेड फॉरेस्ट, विज्ञान ज्योति, असम साइंस सोसायटी मैगजीन, 37(2): 15–17।
- कलिता, आर.के.* (2003): बायोडाइवर्सिटी एंड इट्स मैनेजमेन्ट प्रान्तिक XXII, (21) गुवाहटी, असम, इंडिया।
- हजारिका, पी. और त्रिपाठी, वाई.सी.(2003): प्रॉस्पेक्ट ऑफ एप्लिकेशन ऑफ इको –बायोटैक्नोलॉजिज इन सस्टेनेबल डवलपमेन्ट ऑफ दी रिवर आइसलैण्ड माजूली, "अरण्य जॉरनल ऑफ दी माजुली अरण्य सुरेखा समिति", सूचित।

(*थीसिस देशी भाषा–असमिया में हैं)

सारांश

- कौशिक, पी.; त्रिपाठी, वाई. सी. और पाण्डे, बी.के. (2003): इन्डस्ट्रियल प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ पोस्ट फ्लावरिंग यूटिलाइजेंशन ऑफ बैम्बू रिसोर्सेज। 25 से 27 फरवरी, 2003 तक, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय धारवाड़, सिरसी (कर्नाटक) में बांस और बेंत संसाधनों के संरक्षण, प्रबंध और उपयोग –2003 पर राष्ट्रीय सम्मेलन।

तकनीकी बुलेटिन

1. तीन अलग–अलग भाषाओं (अंग्रेजी, असमिया और बंगाली) में "बांस किसान नर्सरी" 2002 शीर्षक के तहत बांस खेती पर ब्राशुअर्स प्रकाशित करके प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्रशिक्षणार्थियों, फॉरेस्टरों, किसानों और उपभोक्ताओं में वितरण किया।

2. दो भाषाओं (अंग्रेजी और असमिया) में "रैटन फॉर प्रास्पैरिटी" 2003 शीर्षक से बेंत खेती पर ब्राशुअर्स प्रकाशित करके प्रशिक्षण अवधि में प्रशिक्षणार्थियों, फॉरेस्टरों, किसानों तथा अन्य उपभोक्ताओं में वितरण किया।

3. भुयान, टी.सी.; मीतराम, बी.; पटनायक, एस. और प्रसाद, के.जी. (2003): 'रैटन्सः फॉर प्रॉस्पैरिटी शीर्षक से कपड़ा मंत्रालय और यू.एन.डी.पी. प्रायोजित परियोजना बांस और बेंत परियोजना के अर्न्तगत वितरण के लिए अंग्रजी और असमिया में तकनीकी बुलेटिन तैयार किया गया।

अन्य द्वारा आयोजित

1. इस संस्थान के श्री ए.खार्शि–इंग, समूह समन्वयक (अनुसंधान), डा. जसबीर सिंह, वैज्ञानिक 'ई' और डॉ. टी.सी. भुयान, आर.ए.(एस.जी.) ने नागालैण्ड वन विभाग द्वारा आयोजित कोहिमा, नागालैण्ड में 9 दिसम्बर, 2003 को बांस और इसके उपयोग पर बैठक/सम्मेलन में भाग लिया।
2. श्री एस. पटनायक, वैज्ञानिक सी. ने 27 फरवरी से 4 मार्च, 2004 तक नई दिल्ली में सम्पन्न VII वें विश्व बांस कांग्रेस में भाग लिया और "साइन्टिफिक क्लम्ब मैनेजमेन्ट फॉर सस्टेनेबल शूट प्रोडक्शन इन डेन्ड्रोकैलामस हेमिल्टोनाई नीस एन्ड एरन शीर्षक के तहत एक शोधपत्र किया"।
3. डॉ. जसबीर सिंह, प्रमुख, झूम खेती प्रभाग ने असम विश्वविद्यालय, सिल्चर में 22 और 23 मार्च, 2004 को सम्पन्न "पूर्वोत्तर भारत में पारिस्थितिकी एवं जैव विविधता" पर गोल मेज सम्मेलन में भाग लिया।
4. श्री जी. ठाकुरिया, आर.ए. I, झूम खेती प्रभाग ने एलंगमारा जोरहाट, असम में 21 से 24 फरवरी, 2004 तक सम्पन्न कृषक समारोह में भाग लिया।
5. डॉ. वाई.सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'डी' और श्री पी.के. कौशिक, वैज्ञानिक 'बी', समुदाय वानिकी और विस्तार ने 16 से 19 फरवरी, 2004 तक सांख्यिकी विभाग, गुवाहटी विश्वविद्यालय, गुवाहटी द्वारा आयोजित और आई.एस.आई., कोलकाता की एस.क्यू.सी. इकाई द्वारा प्रायोजित "प्रयोगों का अभिकल्प और इसका उपयोग" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
6. डॉ वाई.सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'डी' और श्री पी.के. कौशिक, वैज्ञानिक 'बी', समुदाय वानिकी और विस्तार प्रभाग, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने नई दिल्ली में सम्पन्न VIIवीं विश्व बांस कांग्रेस में भाग लिया और दो मौखिक और दो पोस्टर प्रस्तुत किया।
7. 21 से 24 जनवरी, 2004 तक एलंगमारा, जोरहाट में आयोजित "कृशोक समारा (किसानों का उत्सव)" में प्रदर्शनी एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शन किया गया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित

1. श्री बी.के. पाण्डे, वैज्ञानिक 'बी', समुदाय वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने 23 से 25 सितम्बर, 2003 तक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में सम्पन्न "पूर्वोत्तर भारत के लिए उन्नत वनीकरण प्रौद्योगिकियों का उपयोग" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और "एक्सटेंशन ऑफ टैक्नोलॉजी फ्रार इन्हैन्समेंट ऑफ प्रोडक्टिविटी अंडर कम्यूनिटी फॉरेस्ट्री एंड एक्सटेंशन प्रोग्राम" शीर्षक से एक शोधपत्र प्रस्तुत किया।
2. विपणन के लिए प्रक्रमित बांस प्ररोहों से संबंधित उद्यमिता कार्यकलापों के लिए क्षमता की प्रारम्भिक पहचान के लिए प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद् (टी.आई.एफ.ए.सी.), भारत सरकार से एक दल ने 17 मई, 2002 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का दौरा किया।
3. एन.ई.आर.आई.एस.टी., निरजूली अरूणाचल प्रदेश से आए एक वानिकी विद्यार्थी श्री दिव्या निनाद कौल को 3 से 18 जून, 2003 तक अल्पकालीन प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया और उसे श्री भोबेस गोगाई, आर.ए. II/एस.एम.एम. प्रभाग द्वारा नाहारोनी प्रायोगिक फार्म में किए जा रहे अल्प अवधि और लागत प्रभावी पौधशाला और क्षेत्र परीक्षण के संबंध में सम्बन्धित अनुसंधान सूचना से अवगत कराया गया।
4. 23 से 25 सितम्बर, 2003 तक पूर्वोत्तर भारत के लिए "उन्नत वनीकरण प्रौद्योगिकियों का उपयोग" पर पूर्वोत्तर क्षेत्र के वन अधिकारियों के लिए तीन दिवसीय एन.ए.इ.बी.– प्रायोजित प्रशिक्षण आयोजित किया गया। निदेशक, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान ने सत्र का उद्घाटन किया जिसमें इस प्रशिक्षण में संस्थान के सभी वैज्ञानिक एवं अधिकारियों,

पूर्वोत्तर क्षेत्र के चौबीस वन अधिकारियों साथ ही आई.एन.बी.ए.आर, एन.ई.आर.आई.एस.टी. और एन.ई.एच.यू. और शिलांग से विशेषज्ञों ने भाग लिया।

5. अनुसंधान सलाहकार समूह की बैठक 5 और 6 नवम्बर, 2003 को सम्पन्न हुई जिसमें अनुसंधान सलाहकार समूह सदस्यों ने जारी परियोजना कार्य की प्रगति का पुनरीक्षण किया और सदस्यों ने परियोजना के तकनीकी उच्चीकरण के लिए सुझाव दिया।

6. श्री एस. पटनायक, वैज्ञानिक 'सी' ने सितम्बर, 2003 के दौरान वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में सम्पन्न पुनरूत्पादन टास्क फोर्स बैठक में भाग लिया और "कोहोर्ट मैंपिंग इन बैम्बू रीसोर्स मैनेजमेन्ट" शीर्षक से एक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

7. श्री एस. पटनायक, वैज्ञानिक 'सी' ने एन.ए.ई.बी. (एन.ई.एच.यू) और आर.एफ.आर.आई. द्वारा जोरहाट में संयुक्त रूप से आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और "संयुक्ताक्षी बांसों की खेती वैज्ञानिक तकनीकें और पद्धतियां" पर प्रशिक्षण दिया।

8. श्री अनुप चन्द्रा ने 20 जनवरी, 2004 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में "भू सत्यापन के लिए सर्वेक्षण पार्टियों के लिए बांस प्रजातियों की पहचान" पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में भाग लिया।

अवार्ड

- डॉ. अशोक कुमार, वैज्ञानिक 'सी', वृक्ष सुधार और प्रवर्धन प्रभाग, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट को मेलाइना आर्बोरीया के विशेष सन्दर्भ में वृक्ष सुधार के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्य के लिए एशिया पेसिफिक एसोसिएशन ऑफ फॉरेस्ट्री रीसर्च इन्सटीट्यूट द्वारा डॉ.वाई.एस. राव फॉरेस्ट्री रीसर्च अवार्ड, 2003 प्रदान किया गया। उन्हें यह अवार्ड मनिला, फिलिपिन्स में 21 अक्टूबर, 2003 को ए.पी.एफ.आर.आई. की जनरल असम्बेली बैठक के दौरान प्रदान किया गया।
- डॉ. कुमार अपने उल्लेखनीय कार्य के सम्मान में ए.पी.एफ.आर.आई. से यह प्रतिष्ठित अवार्ड प्राप्त करने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिक हैं।
- श्री एस. पटनायक, वैज्ञानिक 'सी' ने 27 फरवरी से 4 मार्च, 2004 तक नई दिल्ली में सम्पन्न VIIवीं विश्व बांस कांग्रेस में प्रस्तुत अपने शोधपत्र के लिए सर्वोत्तम शोधपत्र अवार्ड प्राप्त किया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

श्री प्रद्युत बोदोलोई, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, असम सरकार ने 27 जून, 2003 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट के निदेशक, वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने प्रयोगशाला संस्थान के प्रमुख कार्यकलापो पर चर्चा में भाग लिया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान पुस्तकालयः संसाधन एवं सेवाएं

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान पुस्तकालय वानिकी से संबंधित साहित्य के संग्रहण के साथ पूरे पूर्वोत्तर भारत में एक अग्रणी संगठनात्मक ढांचा है। विशेष किस्म के साहित्य और सेवाओं के साधनों के साथ यह एक विशेष पुस्तकालय है। संग्रहण में मुख्यतः वानिकी का व्यापक क्षेत्र और इसके सम्बद्ध क्षेत्र जैसे वनस्पति और प्राणिजात दस्तावेज, जैव प्रौद्योगिकी, पारिस्थितिकी, कृषिवानिकी और प्रबंध, जैव विविधता, निम्नीकृत भूमि का सुधार, प्राकृतिक संसाधनों का सतत् उपयोग शामिल हैं।

जोरहाट में और इसके आस पास विभिन्न शैक्षिक और अनुसंधान संस्थानों तथा अन्य पूर्वोत्तर राज्यों से हर साल करीब

500 पाठक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान पुस्तकालय के संसाधनो का सतत् रूप से उपयोग करते हैं। वानिकी तथा इससे सम्बद्ध क्षेत्रों पर वर्षा वन अनुसंधान संस्थान पुस्तकालय में उपलब्ध संसाधनों का ब्योरा इस प्रकार है–

संख्या	मदें	संख्यायें	टिप्पणी
1.	पुस्तकें	3715	वार्षिक रिपोर्ट सहित
2.	जॉरनल्स	38	भारतीय व विदेशी
3.	न्यूजलैटर और बुलेटिन	67	भारतीय व विदेशी
4.	जॉरनल के बाउण्ड वॉल्यूम	928	94 शीर्षक मिलाकर
5.	डाक्यूमेन्टरी सीडी	30	16 शीर्षक मिलाकर
6.	वीडियो कैसेट	17	17 शीर्षक मिलाकर